दिनांक 1 अगस्त, 1984

सं.श्रो. वि./179-84/27632.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० सुरज स्टील लि०,इण्डस्ट्रियल एरिया, सोनीपत के श्रीमिक श्री जंगा सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, श्रव श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्ठित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारः (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिष्ठसूचना सं. 3864-ए. श्रो. (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिष्ठनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेत् निविष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री जंगा सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं मो वि./रोहतक/62-84/27639 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० (1) मैंनेजिंग डायरैक्टर, दी हरियाणा डेरी डिवैलपमैंट कारपोरेशन लि०/हरियाणा डिवलपमैंट को० थ्रो० फैंडरेशन लि०, एस० सी० थ्रो० 127-128, दिसेक्टर 17, चण्डीगढ़ (2) जनरल मैंनेजर, हरियाणा डेरी डिवैलपमैंट को० थ्रो० फैंडरेशन, मिल्क प्लांट, रोहतक, के श्रमिक श्री जीवन दास सैनी तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधितयम, 1947 की धार। 10 की उपधार। (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाण के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नबम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी श्रिधसूचना सं. 3864-ए. श्री. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधित्यम की घारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या। सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जीवन दास सैनी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो. वि./हिसार/47-84/27661.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, की राय है कि मैं वी शेरगढ़ कोश्रोशेटिय केडिट सर्विस सोसाईटी लि०, शेरगढ़ मण्डी, डब्बवाली के श्रामिक श्री कपूर सिंह भट्टी तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, घव, भीबोगिक विवाद भिन्नियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भिन्नियां सं. 9641-1-श्रम 70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिष्ठसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिष्ठित्यम की धारा 7 के भधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या एससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणंग हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच श्रा तो विवादग्रस्त मामला है। या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री कपूर सिंह भट्टी की सेनाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो.िषः/एफ. डी./23-84/27681.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० कोत्टोनैन्टल रिफरैक्टीज, प्लाटनं० 42, सैक्टर 25, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री श्री राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अपिसूचना सं 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियाम की घारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणंय के लिए मिर्दिंग्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री श्री राम की सेवाग्रों का संमापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकवार है ?

सं. स्रो. वि./हिसार/44-84/27688—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० नारंग कोब्रापरेटिव क्रेडिट एण्ड सर्विम सोसायटी लि० नारंग, तहसील डब्बवाली, जिला सिरसा के श्रीमिक श्री कृष्ण कुमार तथा उसके प्रवत्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल जिवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब ग्रीबोगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यवाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3864-ए. म्रो. (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्त्रकों तथा श्रमिक के बोच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री कृष्ण कुमार की सेशाओं का समापन त्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो.ति./एफ.डी./१03-84/27694.--चूंकि हरियाणा के राज्यनाल की राये है कि मै. नैशनल पैकिंग, लिंक रोड़, फरीदाबाद के श्रमिक श्री मेवा लाल तथा उसके प्रबंधकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौ: चूंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद भिद्यित्यम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3 श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए मिद्यसूचना सं. 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्टियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद को विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवत्यकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अयवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री मेवा लाल को सेव श्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है ?

सं. भ्रो. वि./एफ.डो./87-84/27701.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की रामे है कि मैं बेरी सन्ज (इण्डिया) प्रा०लिं , डी० एल० एफ० फरीदाबाद, के श्रमिक श्री लक्षमी चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के नध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीदोगिक विवाद है;

स्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रव, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) दारा प्रदान की गई मिन्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपील इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495 जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1953 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद, को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट कर्ते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित सामला है:---

क्या श्री लक्षमी चन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक हैं ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार हैं ?